Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Review Paper

जैन दर्शन एवं और बौद्ध दर्शन का शिक्षा परिप्रेक्ष्य: एक तुलनात्मक विश्लेषण

महेन्द्र कुमार[1*]

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *महेन्द्र कुमार

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.14632652

सारांश

भारत के प्राचीन दर्शनों ने शिक्षा को जीवन के प्रमुख उद्देश्यों में स्थान दिया है। जैन और बौद्ध दर्शन, जो दोनों ही श्रमण परंपरा से जुड़े हुए हैं, शिक्षा के माध्यम से आत्मिक और सामाजिक उन्नति की बात करते हैं। ये दोनों दर्शन समान रूप से नैतिकता, ध्यान और आत्म-अनुशासन पर जोर देते हैं, लेकिन उनके दृष्टिकोण और शिक्षा पद्धतियों में कुछ मौलिक भेद भी विद्यमान है। जैन और बौद्ध दोनों दर्शनों ने आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है और इन्होंने भारतीय शिक्षा पद्धति को गहरे रूप में प्रभावित किया है। दोनों दर्शनों की शिक्षा पद्धति में अनेक समानता होने के साथ-साथ विभिन्नताएं भी पायी जाती हैं। हालांकि दोनों दर्शनों की शिक्षा पद्धति को भारतीय शैक्षिक पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र इन्हीं बातों का विश्लेषण करते हुए जैन और बौद्ध दर्शन का आधुनिक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। यह शोध पत्र मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

Manuscript Info.

✓ **ISSN No:** 2584-184X
✓ **Received:** 19-09-2024
✓ **Accepted:** 05-12-2024
✓ **Published:** 11-01-2025
✓ **MRR:3(1):**2025;03-09
✓ **©2025, All Rights Reserved.**
✓ **Peer Review Process:** Yes
✓ **Plagiarism Checked:** Yes

How To Cite

महेन्द्र कु. जैन दर्शन एवं और बौद्ध दर्शन का शिक्षा परिप्रेक्ष्य: एक तुलनात्मक विश्लेषण. Indian Journal of Modern Research and Reviews: 2025; 3(1):03-09.

मुख्य शब्द: जैन धर्म, गौतम बुद्ध, आधुनिक शिक्षा, बौद्ध दर्शन

जैन धर्म और बौद्ध धर्म: सामान्य परिचय

जैन धर्म का गठन *550* ईसा पूर्व में हुआ था। जैन धर्म को पारंपरिक रूप से जैन धर्म के रूप में जाना जाता है जो एक प्राचीन भारतीय धर्म है। जैन धर्म के प्रचारकों को जैन के रूप में जाना जाता था जो संस्कृत शब्द जिन से उत्पन्न हुआ था। वे भगवान महावीर के उपदेशों का पालन करते हैं। भगवान महावीर जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर थे, भगवान महावीर की शिक्षाओं वाले ग्रंथों को आगम के रूप में जाना जाता है। दिगंबर और श्वेतांबर जैन धर्म के दो संप्रदाय हैं। जैन धर्म के मार्गदर्शक सिद्धांत या तीन रत्न हैं- सही धारणा (सम्यक दर्शन) सही ज्ञान (सम्यक ज्ञान) सही आचरण (सम्यक चरित्र)। इसी प्रकार, बौद्ध धर्म यह दुनिया का चौथा सबसे बड़ा धर्म है। बौद्ध गौतम बुद्ध के उपदेशों का पालन करते हैं। हीनयान और मलय बौद्ध धर्म के दो मुख्य विद्यालय हैं। बुद्ध की शिक्षाओं में चार महान सत्यों पर प्रकाश डाला गया है। सारा अस्तित्व एक दु:ख है। दु:ख का कारण तृष्णा है। दु:ख का अंत तृष्णा के अंत के साथ होता है। इन धर्मों ने भारत में जीवन जीने के अलग-अलग तरीके लाए और इन्हें आम जनता ने स्वीकार किया, खास तौर पर दबी-कुचली जातियों ने इसे सहर्ष अपनाया।

जैन दर्शन और बौद्ध दर्शन: समानताएँ

इन धर्मों में कुछ समानताएँ हैं जो भारत के साथ-साथ विश्व स्तर पर इन धर्मों की लोकप्रियता के लिए महत्वपूर्ण हैं।

1. प्रमुख प्रमुखों की पृष्ठभूमि महावीर और गौतम बुद्ध दोनों ही क्षत्रिय जाति के थे। उस समय क्षत्रियों को जाति पदानुक्रम की योद्धा जाति माना जाता था। वे दोनों अपने राजसी जीवन को छोड़कर सामाजिक रूप से दलितों, वैश्यों, जिन्हें उनकी बढ़ती

© 2025 महेन्द्र कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

हुई मौद्रिक शक्ति से संबंधित सामाजिक स्थिति नहीं दी गई थी, और शूद्रों से बात करते थे, जिनके साथ निस्संदेह दुर्व्यवहार किया जाता था।

2. मुक्ति बौद्ध धर्म और जैन धर्म दोनों ही अपने भीतर के स्व को मुक्त करने के बारे में विस्तार से बात करते हैं। बौद्ध धर्म का मानना है कि मुक्ति का मार्ग अच्छे आचरण और अच्छे कर्मों से होकर जाता है। यह आठ गुना पथ का अनुसरण करता है जिसमें सही दृष्टिकोण, सही विचार, सही भाषण, सही कार्य, सही आजीविका, सही मानसिकता, सही एकाग्रता शामिल हैं। जैन धर्म का मुक्ति का मार्ग सही धारणा, ज्ञान और सही आचरण का पालन करना है। मुक्ति पाने के लिए व्यक्ति को सांसारिक सुखों को छोड़ना पड़ता है। इसमें पाँच महाव्रत के रूप में जाने जाने वाले पाँच महान व्रत हैं जिनमें अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह शामिल हैं।
3. ध्यान अभ्यास को दोनों धर्मों में अपने भीतर के आत्म पर ध्यान केंद्रित करने के साधन के रूप में प्रचारित किया जाता है ताकि खुद के साथ और दुनिया के साथ शांति प्राप्त की जा सके। उन्होंने अपने स्वयं के दार्शनिक और नैतिक लक्ष्यों के अनुरूप योग और ध्यान की प्रणाली को संशोधित किया। उनका मानना था कि आंतरिक आत्म को शुद्ध और मुक्त करने के लिए आपको व्यापक ध्यान के माध्यम से इसके साथ जुड़ने की आवश्यकता है। जैन धर्म दर्शन का एक विचार उन्मुख स्कूल है जो ध्यान को किसी भी समय अवधि में किसी के मन की स्थिति के रूप में दर्शाता है। बौद्ध ध्यान तकनीकें खोज में सहायता करने के लिए स्वयं को उपयुक्त वातावरण प्रदान करके ज्ञान की खोज करने के तरीकों को दर्शाती हैं।
4. लिंग और जाति के प्रति दृष्टिकोण दोनों धर्म जाति व्यवस्था से जुड़े किसी भी काम को नहीं करना चाहते थे। उनके अनुयायी दोनों लिंगों से संबंधित थे और पदानुक्रम की सभी जातियों को शामिल करते थे, शिष्यों के बीच कोई भेदभाव नहीं था। वे लोगों के बीच भेदभाव पैदा करने में विश्वास नहीं करते थे। उनका मानना था कि दुनिया में हर कोई एक दूसरे के बराबर है। वे जाति व्यवस्था के विरोधी थे और समाज के निचले तबके से कई अनुयायी उनके अनुयायी थे।
5. अहिंसा दोनों धर्मों का अभिन्न अंग थी। यह उनकी शिक्षाओं का एक हिस्सा था। दोनों धर्म शांतिप्रिय थे और आंतरिक शांति और संतुष्टि के बारे में बात करते थे। उन्होंने अहिंसा का उपदेश दिया। इसे सर्वोच्च नैतिकता माना जाता था। यह दोनों धर्मों के प्रमुख गुणों में से एक है। यह भी कहा गया कि किसी भी तरह की अहिंसा या हिंसा के कर्म परिणाम होंगे। जैन धर्म ने कर्म तो दूर, विचारों और वाणी में भी हिंसा को प्रतिबंधित किया है। बौद्ध धर्म शांतिप्रिय है और इसने पूरे धर्म को शांति के इर्द-गिर्द केंद्रित किया है। शरीर को खुद के साथ, आसपास के लोगों और दुनिया के साथ शांति में रहने के लिए ध्यान का अभ्यास किया जाता है।

जैन दर्शन और बौद्ध दर्शन: अंतर

विश्व के इन दोनों प्रमुख धर्मों के दार्शनिक विचारों में कुछ अंतर भी है जिसे नीचे दर्शाया गया है:-

- मोक्ष या मुक्ति की प्राप्ति के संदर्भ में बौद्ध धर्म कहता है कि मोक्ष या मुक्ति पाने के लिए आपको उन अभ्यासों से गुजरने की ज़रूरत नहीं है जो आपको खुद को आत्म-पीड़ा की स्थिति में डालने के लिए मजबूर करते हैं। एक बार जब आप मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं, तो आप खुद को सभी इच्छाओं से मुक्त कर लेते हैं और दुनिया में रहते हुए मोक्ष प्राप्त करना संभव है।
- जैन धर्म में मोक्ष सबसे उच्च और सबसे महान उद्देश्य है जिसे एक आत्मा को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। जैन धर्म का मानना था कि मोक्ष और निर्वाण केवल मृत्यु के बाद ही संभव है। आत्मा को कर्म के बंधनों से खुद को मुक्त करने की आवश्यकता है जिसके परिणामस्वरूप कई मृत्यु और पुनर्जन्म के कारण दुख होता है।
- महिलाओं की स्थिति बौद्ध धर्म में पुरुषों और महिलाओं के बीच कोई भेद नहीं था। संघ में महिलाएं पुरुषों के बराबर थीं। बौद्ध धर्म के तहत दोनों लिंगों को समान अधिकार दिए गए थे और वे संघ का अभिन्न अंग थे। उनका मानना था कि महिलाओं और पुरुषों को हर चीज के लिए समान रूप से जिम्मेदार होना चाहिए। उनका मानना था कि महिलाएं पुरुषों की तरह ही सत्य को समझने में सक्षम हैं।
- जैन धर्म अभी भी महिलाओं के प्रति थोड़ा निष्पक्ष था। हालाँकि जैन धर्म नग्नता में विश्वास करता था, लेकिन उन्हें नहीं लगता था कि महिलाओं को नग्न नहीं होना चाहिए क्योंकि इससे पुरुषों में यौन इच्छा जागृत होती है। यह महिलाओं को हानिकारक भी मानता था क्योंकि उनका मानना था कि मासिक धर्म का खून सूक्ष्म जीवों को मारता है। मासिक धर्म चक्र के कारण उन्हें अशुद्ध भी माना जाता था।

वैश्विक लोकप्रियता:

हालाँकि दोनों धर्मों की उत्पत्ति भारत से हुई थी, लेकिन वे दोनों दुनिया में बहुत अलग-अलग तरीकों से फले-फूले। बौद्ध धर्म ने भारत में बहुत लोकप्रियता हासिल की और विश्व स्तर पर भी व्यापक रूप से फैला। बौद्ध धर्म की मान्यताएँ दुनिया भर में फैलीं क्योंकि वे जैन धर्म की तुलना में अधिक उदार और तुलनात्मक रूप से कम कठोर थी और दुनिया भर में लगभग 500-600 मिलियन की आबादी को वर्तमान में बौद्ध धर्म शामिल करता है।

दोनों धर्म कई आधारों पर समान हैं, लेकिन जैन धर्म अतिवाद में विश्वास करता है और अपने आचरण में बहुत कठोर है। इसने दुनिया में इसकी लोकप्रियता में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। जैन धर्म भारत में विकसित होने में कामयाब रहा है, लेकिन वैश्विक नहीं बन पाया है। इसकी आबादी 50-60 मिलियन है।

जैन और बौद्ध दर्शन का शिक्षा परिप्रेक्ष्य

जैन और बौद्ध दर्शन के शिक्षा परिप्रेक्ष्य में अनेक समानताएं होते हुए भी अनेक प्रकार की विभिन्नताएं पायी जाती हैं। हालांकि दोनों ही दर्शन व्यक्ति और समाज के विकास और उनके उद्धार के लिए अनेक प्रकार की शिक्षाओं को ग्रहण करने पर बल देते हैं। साथ ही, लोगों को शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा भी देते हैं ताकि वे अपनी सर्वांगीण उन्नति कर सकें।

© 2025 महेन्द्र कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

जैन शिक्षा दर्शन:
जैन दर्शन के विभिन्न सिद्धांतों के मुख्य आधार अहिंसा, अनेकांतवाद और अपरिग्रह है। ये सिद्धांत शिक्षा के क्षेत्र में सहिष्णुता, विविध दृष्टिकोणों की स्वीकृति और भौतिक सीमाओं का महत्व समझाते हैं और उन पर आचरण करने पर बल देते हैं।

जैन शिक्षा का उद्देश्य:
जैन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य आत्म-ज्ञान का बोध, मोक्ष की प्राप्ति और व्यक्ति का नैतिक चरित्र निर्माण है। यह व्यक्ति को आंतरिक शुद्धता और आत्म-अनुशासन पर बल देने के साथ-साथ इनको अपनाने को भी प्रेरित करता है।

जैन शिक्षा पद्धति: जैन शिक्षा पद्धति के अनेक आयाम हैं जो इसे वर्तमान संदर्भ में भी प्रामाणिक बनाते हैं जो निम्नलिखित हैं:-

अहिंसा पर आधारित शिक्षा: जैन शिक्षा पद्धति अहिंसा पर विशेष बल दिया गया है। इसमें सभी प्रकार की हिंसा से बचाव पर जोर दिया गया है जिसमें शारीरिक, मानसिक और वाचिक हिंसा भी शामिल है।

अनेकांतवाद का अभ्यास: इसके अंतर्गत शिक्षा में विविध दृष्टिकोणों का समावेश किया गया है जो मानव जीवन के लिए उपयोगी होने के साथ-साथ उनके लिए अनुकरणीय भी है।
प्राचीन गुरुकुल प्रणाली: जैन शिक्षा पद्धति प्राचीन गुरुकुल प्रणाली का अनुसरण करती है। इसमें जैन आचार्य अपने छात्रों को व्यक्तिगत रूप से मार्गदर्शन प्रदान करते थे ताकि वे सर्वांगीण उन्नति कर सके।

ध्यान और तप का महत्व: जैन शिक्षा प्रणाली में तप और ध्यान को विशेष महत्त्व दिया गया है। इसमें ध्यान (मन पर नियंत्रण), स्वाध्याय, और तप (आत्म-नियंत्रण) के अभ्यास से अपने व्यक्तित्व का विकास करना शामिल है।

शिक्षा में जैन धर्म के ग्रंथों की भूमिका: जैन शिक्षा दर्शन में जैन विद्वानों द्वारा लिखे गए विभिन्न ग्रंथों की महत्वपूर्ण भूमिका है जो जैन दर्शन के महत्वपूर्ण स्रोत भी हैं।
1. आगम साहित्य: जैन धर्म के शिक्षण का प्रमुख स्रोत माना जाता है।
2. तत्त्वार्थ सूत्र: यह ग्रंथ जीवन के मूलभूत सिद्धांतों और जैन शिक्षा के उद्देश्यों को स्पष्ट करता है।

जैन शिक्षण पद्धति:
जैनागमों में भी ज्ञान की महिमा स्वीकारी गई है। यह ज्ञान सर्वसाधारण को किस प्रकार सुलभ हो। इसके लिए भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षण पद्धति पर विशेष ध्यान दिया गया है। जैन शिक्षा पद्धति के विषय में हमें जैन धर्मग्रन्थों से अनेक उल्लेख प्राप्त होते है कि भारतवर्ष में प्राचीनकाल में एक अत्यन्त सुव्यवस्थित जैन शिक्षण पद्धति थी।
जैन शिक्षा पद्धति का प्राचीन काल से क्रमिक विकास हुआ। तीर्थंकरों, गणधर तथा गणधरों से आचार्य परम्परा द्वारा शिक्षा प्रवाहित होती रही। प्रारम्भिक चरण में जब भारतीय चिन्तन मोक्ष को केन्द्र बिन्दु मानकर चल रहा था; उस समय जैन शिक्षा पद्धति का जो स्वरूप था वह आगे चलकर देश और काल के अनुरूप विकसित हुआ। जैन धर्म में पंच परमेष्ठीयों (अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु) महत्वपूर्ण स्थान है। इनमें उपाध्याय का कार्य मुख्य रूप से शिक्षा का बताया है। आचार्य, उपाध्याय और साधु ये तीनो ही गुरू जैन धर्म में मुनिव्रत का पालन करते है। ये साधु वर्षाकाल में चार महीने एक ही स्थान पर रहकर अस्थायी रूप से शिक्षा के केन्द्रों को निर्मित करते है। गुरू, शिष्य और अभिभावक के उदात्त सम्बन्धों के कारण जैन धर्म में शिक्षण पद्धति अन्य शिक्षण पद्धतियों की तुलना में अनूठी है।

जैन दर्शन में ज्ञान के पॉच भेद बताऐ है:- 1. मति ज्ञान, 2. श्रुत ज्ञान, 3. अवधि ज्ञान, 4. मनःपर्यय ज्ञान, 5. केवल ज्ञान।
सामान्य व्यक्ति का विकास मतिज्ञान और श्रुतज्ञान से प्रारम्भ होता है। इन्द्रियों और मन की सहायता से होने वाले ज्ञान को मतिज्ञान कहा जाता है। मतिज्ञान से व्यक्ति की आई.क्यू. का पता लगता है। इसी योग्यता के आधार पर उसके श्रुतज्ञान का विकास होता है। इसी ज्ञान को मौखिक और स्मृति के माध्यम से वर्धित किया जाता था तथा व्यक्तित्व का समग्र विकास किया जाता था। समग्र विकास से तात्पर्य अन्तरंग एवं बाह्य सभी गुणों का विकास है।
व्य
क्तित्व के सम्पूर्ण विकास के लिए तीन कारण बताये गये है।:-
1. सम्यक-दर्शन 2. सम्यक-ज्ञान 3. सम्यक-चरित्र।
शिक्षा का सम्पूर्ण विषय सम्यक्-दर्शन, सम्यक्-ज्ञान और सम्यक्चारित्र के अन्तर्गत समाविष्ट हो जाता है। इन्हीं तीनों के सम्मिलित रूप को मोक्ष प्राप्ति का मार्ग कहा गया है। शिक्षा पद्धति का प्रयोग जैन जगत में तत्व ज्ञान के लिए किया गया है। तत्वों के यथार्थ स्वरूप की श्रद्धा को सम्यक्दर्शन कहते है। वास्तविक बोध सम्यक् ज्ञान है तथा आत्म कल्याण के लिए किया जाने वाला सदाचरण सम्यक् चारित्र है।
इसके अतिरिक्त पदार्थ विधि, संगोष्ठी विधि, व्याख्या विधि आदि शिक्षा की पद्धतियों का प्रयोग प्राचीन काल मे गुरूओं, आचार्यों द्वारा किया जाता था। इस प्रकार गूढ़ से गूढ़ विषय को भी उक्त विधियों के माध्यम से इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता था कि शिष्य भली प्रकार इसे हृदयंगम कर सके।

बौद्ध दर्शन का शिक्षा परिप्रेक्ष्य:
बौद्ध धर्म की नींव पर प्राचीन भारत में एक नई और विशेष शिक्षा प्रणाली का जन्म हुआ। बौद्ध धर्म ने एक व्यापक बदलाव लाया जिसने प्राचीन भारत या प्राचीन बौद्ध दुनिया में शिक्षा प्रणाली के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह सर्वविदित है कि भारत में बौद्ध धर्म के उदय के साथ ही भारत की संस्कृति और सभ्यता के स्वर्ण युग का उदय हुआ। बौद्ध धर्म के प्रभाव में भारतीय सभ्यता के सभी पहलुओं में प्रगति हुई। शिक्षा के कई केंद्र उभरे जो पहले मौजूद नहीं थे।

© 2025 महेन्द्र कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

बौद्ध दर्शन, जो गौतम बुद्ध की शिक्षाओं पर आधारित है, न केवल आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करता है, बल्कि शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्र में भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। बौद्ध दर्शन की शिक्षा के प्रति दृष्टि संपूर्ण मानवता के उत्थान के लिए मार्गदर्शक है। यह आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है।

बौद्ध शिक्षा प्रणाली:

बौद्ध शिक्षा प्रणाली का विकास बुनियादी जीवन के आधार पर हुआ था। यह शिक्षा एक छात्र के नैतिक, मानसिक और शारीरिक विकास पर आधारित है। मध्यकाल में शिक्षा की सबसे महत्वपूर्ण प्रणाली, बौद्ध शिक्षा प्रणाली थी। भगवान बुद्ध की शिक्षाओं और जीवन के अनुभवों के आधार पर विचारधारा एक पूर्ण शिक्षा प्रणाली में बदल गई है, जिसे हम बौद्ध शिक्षा प्रणाली के नाम से जानते हैं। बुद्ध ने तर्क दिया कि परम ज्ञान या 'अनुत्तर-सम्यक-संबोधि' कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे हासिल किया जा सकता है, बल्कि यह पहले से उपस्थित है और व्यक्ति को इसका पता लगाने के लिए स्वयं के दायरे में जाने की जरूरत है। बौद्ध शिक्षा प्रणाली भगवान बुद्ध के कुछ प्रमुख उपदेशों पर ही आधारित है।

बौद्ध शिक्षा प्रणाली छात्रों को संघ के नियमों का पालन करने के लिए उनका मार्गदर्शन करता है। 5 वीं शताब्दी ईसा पूर्व में, बौद्ध शिक्षा मूल रूप से भगवान बुद्ध द्वारा सिखाई गई थी और इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि यह सभी जातियों के लिए मठवासी और समावेशी थी जबकि उस समय भारत में जाति व्यवस्था, व्यापक रूप से प्रचलित थी। बौद्ध शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य एक बच्चे के व्यक्तित्व के सर्वांगीण और समग्र विकास को सुगम बनाना है, चाहे वह बौद्धिक और नैतिक विकास के साथ-साथ शारीरिक और मानसिक विकास भी हो।

बौद्ध शिक्षा प्रणाली के उद्देश्य:

बौद्ध दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य न केवल बौद्धिक विकास है, बल्कि व्यक्ति के नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक गुणों का भी विकास करना है। बौद्ध शिक्षा का लक्ष्य है दुःखों से मुक्ति, आत्मज्ञान, और शील, समाधि, तथा प्रज्ञा के माध्यम से मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति करना शामिल है।

बौद्ध शिक्षा के कुछ मुख्य उद्देश्य थे, जो इस प्रकार हैं:-

- **चरित्र का निर्माण करना**- चरित्र निर्माण के लिए जरूरी नियमों का निर्धारण किया गया था, जिसमें आत्मसंयम-, करूणा और दया पर सबसे ज्यादा बल दिया गया था।
- **व्यक्तित्व का विकास करना**- आत्म संमय, आत्म निरर्भरता, आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, करूणा तथा विवेक जैसे सबसे अधिक महत्वपूर्ण गुणों का विकास कर छात्र के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना बौद्ध कालीन शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य था।
- **सर्वांगीण विकास**- बौद्ध शिक्षा प्रणाली में छात्र के शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास को ध्यान मे रखकर शिक्षा प्रदान की जाती थी, साथ ही उसके व्यावसायिक विकास को ध्यान में रखकर किसी कलाकौशल व उद्योग की भी शिक्षा प्रदान की - जाती थी। इस तरह व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों के समान विकास पर ध्यान दिया जाता था।
- **बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार करना**- बौद्ध दर्शन में धर्म को संस्कृति का अंग माना गया है तथा संस्कृति के संरक्षण से ही धर्म का संरक्षण हो सकता है। इसके अंतर्गत बुद्ध के उपदेशों का प्रचार करना शामिल था।
- **मोक्ष की प्राप्ति**- बौद्ध धर्म के अनुसार इस संसार के सभी दुःखों का एक मात्र कारण अज्ञानता है। अतः बौद्ध कालीन शिक्षा मे छात्रों को सच्चे एवं सार्थक ज्ञान के विकास पर बल दिया जाता था। बौद्ध काल मे सच्चे ज्ञान से अभिप्राय धर्म एवं दर्शन के चार सत्यों के ज्ञान और उसी के अनुरूप आचरण करने से था, जिससे मोक्ष प्राप्त किया जा सके।
- **आत्म-ज्ञान:** बौद्ध शिक्षा व्यक्ति को आत्म-अवलोकन और आत्म-ज्ञान के माध्यम से स्वयं को समझने में सक्षम बनाती है।
- **व्यावहारिक ज्ञान**: यह दर्शन केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यावहारिक जीवन में इसका उपयोग करने पर बल देता है।

बौद्ध दर्शन की मूलभूत अवधारणाएँ:

बौद्ध दर्शन चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, और प्रतीत्यसमुत्पाद (कारण-कार्य संबंध) पर आधारित है। यह शिक्षा में ध्यान, नैतिकता, और प्रज्ञा (ज्ञान) को प्राथमिकता देता है।[17]

बौद्ध शिक्षा पद्धति:

बौद्ध शिक्षा पद्धति विश्व की प्राचीन शिक्षा पद्धतियों में से एक है इसके अंतर्गत अष्टांगिक मार्ग का अभ्यास: शिक्षा में सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प और सम्यक वाणी जैसे मूल्यों का समावेश किया गया है।

- **महाविहार प्रणाली**: प्राचीन काल में बौद्ध शिक्षा के केंद्र के रूप में अनेक विहारों की स्थापना की गई थी जहां बौद्ध भिक्षु शिक्षा ग्रहण करते थे।
- **विनय पिटक का पालन**: इसमें छात्रों और शिक्षकों के लिए नैतिक नियमों का वर्णन किया गया है जिनका पालन दोनों के लिए करना अनिवार्य था।
- **ध्यान और अनुशासन**: मन को एकाग्र करने के लिए ध्यान और अनुशासन का उपयोग बौद्ध शिक्षा पद्धति में किया जाता था।

शिक्षा में बौद्ध ग्रंथों की भूमिका:

1. त्रिपिटक: बौद्ध शिक्षा का प्रमुख स्रोत है।

2. धम्मपद: नैतिकता और जीवन जीने के सिद्धांत इसके अंतर्गत शामिल किए गए हैं।

बौद्ध शिक्षा का पाठ्यक्रम:

बौद्धकालीन शिक्षा आध्यात्मिक सार थी। इसका मुख्य आदर्श निर्वाण और मोक्ष की प्राप्ति था। बौद्ध भिक्षुओं ने मुख्य रूप से धार्मिक पुस्तकों से ही शिक्षा देना प्रारंभ किया। अध्ययन का मुख्य विषय विनय और धर्म था। बौद्धिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को तीन भागों में बांटा गया हैं:-

© 2025 महेन्द्र कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्राथमिक शिक्षा

प्राथमिक शिक्षा की अवधि 6 वर्ष की थी। इन 6 वर्षों के प्रथम 6 माह छात्रों को सिद्धिरस्तु नामक बाल पोथी पढ़ाई जाती थी जिसकी सहायता से बच्चों को पाली भाषा के 49 वर्ण सिखाए जाते थे। 6 माह के बाद छात्रों को शब्द विद्या (आकृति विज्ञान), शिल्प कला विद्या, चिकित्सा विद्या (आयुर्वेद), तर्क विद्या एवं अध्यात्म विद्या के साथ साथ बौद्ध धर्म के सामान्य सिद्धांत भी बताये जाते थे।

उच्च शिक्षा

उच्च शिक्षा की समय अवधि लगभग 12 वर्ष थी। इनमें छात्रों को व्याकरण, धर्म, ज्योतिष, आयुर्वेद एवं दर्शन का ज्ञान दिया जाता था। व्याकरण एवं साहित्य के साथ पाली, प्राकृत एवं संस्कृत भाषा का ज्ञान भी दिया जाता था। इस पाठ्यक्रम में खगोल शास्त्र, ब्रह्मांड शास्त्र के विषय भी शामिल थे।

भिक्षु शिक्षा

उच्च शिक्षा संपन्न होने के बाद जो विद्यार्थी बौद्ध धर्म को अपनाना चाहता था उससे भिक्षु शिक्षा संपन्न करनी होती थी। भिक्षु शिक्षा की अवधि *8* वर्ष की होती थी। इसके अंतर्गत केवल बौद्ध धर्म एवं दर्शन का ज्ञान दिया जाता था। भिक्षु शिक्षा में पाठ्यक्रम को दो भागों में बांटा जा सकता है, पहला धार्मिक और दुसरा लौकिक।

धार्मिक पाठयक्रम

इसके अंतर्गत बौद्ध धर्म का ज्ञान दिया जाता था जिसके लिए तीन बौद्ध साहित्य पढ़ाए जाते थे- सुत्त पिटक, विनय पिटक और अभिधम पिटक। इन्हें विस्तृत रूप में त्रिपिटक कहा जाता है। इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बौद्ध धर्म का प्रचार करना और मोक्ष प्राप्त करना था।

लौकिक पाठ्यक्रम

इसके अंतर्गत गणित, कला, कौशल एवं व्यवसायिक शिक्षा का ज्ञान दिया जाता था जिससे छात्रों को सामाजिक एवं आर्थिक जीवन के लिए तैयार किया जा सके।

बौद्ध शिक्षा की विधियां*:*

बौद्ध शिक्षा के अंतर्गत अनेक प्रकार की शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता था जिनमें कुछ प्रमुख विधियां निम्न प्रकार हैं:-

- **मौखिक विधि**- वैदिक युग में सीखने का तरीका मुख्य रूप से मौखिक था। इस विधि में शिक्षक विद्यार्थियों को पाठ पढ़ाते थे। एक विशेष पाठ को समझने वाले छात्र प्रचुर मात्रा में विषयों को रट कर सीखते थे।
- **आगमनात्मक विधि**- कई मठवासी स्कूलों और विहारों ने विद्यार्थियों के बौद्धिक कौशल को प्रशिक्षित करने के लिए तर्क या हेतु विद्या की आगमनात्मक पद्धति को शामिल किया। इस पद्धति के अनुसार ऐसे तथ्यों से अध्ययन प्रारंभ किया जाता है जो या तो ऐतिहासिक होते हैं या किसी प्रयोग द्वारा प्राप्त निर्णय के परिणाम होते हैं। इनमें छात्रों के बौद्धिक विकास लाने वाले तर्कों की चर्चा शामिल थी।
- **निगरानी विधि**- निगरानी विधियों की सहायता से, कई अच्छा प्रदर्शन करने वाले छात्रों को अन्य विद्यार्थियों को पढ़ाने और अनुशासित करने की जिम्मेदारी भी प्रदान की जाती थी।
- **परियोजना विधि**- सैद्धांतिक और व्यावहारिक परियोजना प्रदान किए जाते थे, जिससे छात्र के कौशल का आंकलन किया जाता था।

जैन और बौद्ध दर्शन की तुलना: शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में*:*

जैन और बौद्ध दोनों दर्शनों ने आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है और इन्होंने भारतीय शिक्षा पद्धति को गहरे रूप में प्रभावित किया है। दोनों दर्शनों की शिक्षा पद्धति में अनेक समानता होने के साथ-साथ विभिन्नताएं भी पायी जाती हैं। हालांकि दोनों दर्शनों की शिक्षा पद्धति को भारतीय शैक्षिक पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

जैन दर्शन और बौद्ध दर्शन का तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य देखें तो यह पता चलता है कि जैन दर्शन के मुख्य सिद्धांत सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य हैं। जबकि बौद्ध दर्शन ने चार आर्य सत्यों और अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करने पर बल दिया है। शिक्षा के उद्देश्य के संदर्भ में जैन दर्शन की शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति की आत्मा की शुद्धि और उसकी मोक्ष प्राप्ति है। इसी प्रकार, बौद्ध दर्शन की शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति की दुःख से मुक्ति और उसकी निर्वाण प्राप्ति है।

नैतिकता के संदर्भ में जैन दर्शन पंच महाव्रत पर आधारित है। जबकि बौद्ध दर्शन शील, प्रज्ञा, समाधि पर आधारित है। जैन दर्शन और बौद्ध दर्शन की शिक्षण विधियों में भी विभिन्नता पायी जाती है। जैन दर्शन की शिक्षण विधि ध्यान, आत्म निरीक्षण और गुरुकुल प्रणाली पर आधारित है। जबकि बौद्ध शिक्षण पद्धति ध्यान, संवाद और भिक्षु प्रणाली पर आधारित है।

दोनों दर्शनों की सामाजिक प्रासंगिकता के संदर्भ में जैन दर्शन अहिंसात्मक समाज और सह-अस्तित्व की भावना पर बल देता है। जबकि बौद्ध दर्शन सभी व्यक्तियों की समता का सन्देश देने के साथ-साथ विश्व शांति का प्रबल प्रचारक भी है।

जैन दर्शन और बौद्ध दर्शन दोनों की शिक्षा प्रणालियों में पाठ विधि द्वारा शिक्षा का आरम्भ कराए जाने का प्रावधान है। जैन दर्शन में काष्ठ की किसी भी पट्टिका पर पाठ विधि द्वारा शिक्षा का आरम्भ किया जाता है। जबकि बौद्ध दर्शन के अंतर्गत चन्दन की पट्टिका पर शिक्षार्थियों के लिए पाठ विधि का आरम्भ किया जाता हैं। यहां यह कहा जा सकता है कि जैन शिक्षण पद्धति में साधारण परिवार के बालक आसानी से शिक्षारम्भ कर सकते थे। जबकि बौद्ध शिक्षा पद्धति में चंदन की पट्टिका उपलब्ध कराना उनके लिए मुश्किल था।

प्रश्नोंत्तर विधि दोनों ही दर्शनों की शिक्षण पद्धति का आधार रही है। जैन शिक्षण पद्धति में प्रश्नोंत्तर विधि में गुरु शिष्य के कठिन एवं दूरह प्रश्नों के उत्तर बड़े ही सरल ढंग से देते थे। साथ ही, इन प्रश्नों का उत्तर पहेलियों के द्वारा तथा चमत्कारपूर्ण ढंग से देते थे। जबकि बौद्ध शिक्षा प्रणाली में प्रश्न एवं उत्तर के चार प्रकार बताए गए हैं- एकांशव्यारणीय, विभज्यव्यारणीय, प्रतिपृच्छाव्यारणीय और स्थापनीय। ये दोनों शिक्षण प्रणालियों की अपनी-अपनी विशेषताएं हैं।

जैन परम्परा के अनुसार जिस ज्ञान में सम्यक्त्व हो, वह प्रमाण है। बौद्ध परम्परा ने भी प्रमाण विधि को स्वीकार किया है और कहा है

© 2025 महेन्द्र कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

कि जो ज्ञान अविसंवादी है, वह प्रमाण है। परन्तु वस्तु के यथार्थ स्वरुप बताने में अपनी असमर्थता व्यक्त की है। जैन परम्परा में प्रत्यक्ष और परोक्ष के आधार पर प्रमाण के दो भेद किए गए हैं- प्रत्यक्ष के दो अर्थात पारमार्थिक और सांव्यावहारिक तथा परोक्ष के पांच- स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान तथा आगम प्रकारों का निरूपण किया गया है। बौद्ध परम्परा में भी प्रत्यक्ष और अनुमान के दो प्रकारों को बताया गया है।

शास्त्रार्थ विधि दोनों ही परंपराओं में पायी जाती है। परन्तु बौद्ध प्रणाली में इसका विशेष महत्त्व देखने को मिलता है। जैन परम्परा में ननु शब्द कहकर शंका उत्पन्न की जाती थी तथा इतिचेत्र दवारा शंका का निवारण होता था। बौद्ध प्रणाली में संभवतः इस तरह का विधान नहीं है; परन्तु शास्त्रार्थ के निमित्त प्रतिपादन को अनुलोम, प्रतिपक्षी के उत्तर को प्रतिकर्म, प्रतिपक्षी की पराजय को निग्गह, प्रतिपक्ष के हेतु को उसी के सिद्धांत में प्रयोग करने को उपनय तथा निष्कर्षित सिद्धांत को निगमन कहा गया है। इस विधि के द्वारा विद्यार्थियों को कठिन से कठिन विषय भी सरलता से सिखाये जाते थे।

जैन और बौद्ध दोनों ही दर्शनों में उपदेश विधि पायी जाती है तथा दोनों दर्शनों ने यह स्वीकार किया है कि यह विधि प्रौढ़ व्यक्तियों के लिए थी। इस विधि के माध्यम से गुरु अपने शिष्यों को विभिन्न विषयों से संबंधित ज्ञान देते थे। इसका संबंध अनुशासन और नैतिकता से अधिक था जिसमें गुरु शिष्यों को अनुशासन का पाठ पढ़ाने के साथ-साथ उन्हें नैतिकता की शिक्षा भी देते थे ताकि शिष्य उन्हें अपने आचरण में ला सके।

दोनों ही दर्शनों में स्वाध्याय विधि पर बल देते हुए कहा गया है कि स्वाध्याय से कर्मों का नाश, दुःखों का क्षय होता है तथा निर्वाण के मार्ग प्रशस्त होते हैं। प्राचीनकाल में जब पुस्तकों का प्रचलन नहीं था, तब पढ़ने-पढ़ाने के लिए इस विधि का व्यापक रूप में प्रयोग किया जाता था। शिष्य गुरुजनों से शास्त्र श्रवण कर उन्हें अपनी स्मृति में संजोकर रखते थे।

वर्तमान शैक्षणिक पद्धति में शामिल सिद्धांत और प्रायोगिकता का प्रयोग जैन और बौद्ध शिक्षण प्रणाली में व्यापक रूप से किया जाता था। इसमें विभिन्न आचार्य सैद्धांतिक रूप से सर्वप्रथम विद्यार्थी को प्रतिपाद्य विषय के सिद्धातों तथा मौलिक तत्वों की शिक्षा देते थे। उसके पश्चात् उन्हें व्यावहारिक दृष्टि से भी अभ्यस्त कराया जाता था। युद्ध विद्या के विशेष सन्दर्भों में इस विधि का दोनों दर्शनों में स्पष्ट वर्णन मिलता है। इसी प्रकार काव्य शास्त्र की शिक्षा देने के उपरांत व्यावहारिक दृष्टि से काव्य लिखने का भी अभ्यास कराया जाता था।

जैन दर्शन में शिक्षक के लिए गुरु, उपाध्याय, आचार्य, वाचनाचार्य, अध्यापक, मुनि आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। जैन दर्शन में आचार्य को अन्यों की अपेक्षा उच्च स्थान प्राप्त था। मुनि लोग भी त्रयी आदि विधाओं की देते थे। जैन ग्रंथों में दो प्रकार के शिक्षकों का उल्लेख मिलता है- 1. सग्रंथ शिक्षक, 2. निर्ग्रन्थ शिक्षक। सग्रंथ शिक्षक कषाय वस्त्र धारण करते थे तथा वेद-वेदांगों में निपुण होते थे। जबकि निर्ग्रन्थ शिक्षक धार्मिक और दार्शनिक शिक्षा देते थे। बौद्ध दर्शन में शिक्षकों के लिए गुरु, उपाध्याय, आचार्य, अध्यापक आदि शब्दों का उल्लेख मिलता है। उपाध्याय वे भिक्षु होते थे जो दस वर्ष या इससे अधिक समय तक भिक्षु रहे हों, जबकि आचार्य के लिए छह वर्ष या इससे अधिक भिक्षु जीवन अनिवार्य था। आचार्य छात्रों के अनुशासन का अधिकारी होता था जबकि उपाध्याय अध्ययन-अध्यापन से संबंधित था।

निष्कर्ष:

जैन और बौद्ध दर्शन शिक्षा को आत्मिक और सामाजिक उन्नति का साधन मानते हैं। हालांकि उनके दृष्टिकोण और पद्धतियों में अंतर हैं, लेकिन दोनों दर्शनों में नैतिकता, अनुशासन, और ध्यान का महत्व समान है। आज के युग में, जब शिक्षा केवल भौतिक उपलब्धियों पर केंद्रित हो गई है, जैन और बौद्ध शिक्षा दर्शन हमें शिक्षा के माध्यम से मनुष्य के नैतिक और आत्मिक विकास का मार्ग दिखाते हैं।

इस प्रकार जैन और बौद्ध दर्शन में शिक्षा के परिप्रेक्ष्य का तुलनात्मक स्वरुप देखें तो पता चलता है कि दोनों शिक्षण पद्धतियां काफी प्राचीन होने के साथ-साथ वर्तमान में भी प्रासंगिक है। दोनों की शिक्षण पद्धतियों में अनेक समानताएं होते हुए भी अनेक प्रकार भी विभिन्नताएं पायी जाती हैं। हालांकि इन शिक्षण पद्धतियों में अनेकों शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था में प्रभावी रूप से किया जा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जैन डीच. जैन धर्म-दर्शन: एक अनुशीलन. जयपुर: प्राकृत भारती अकादमी; *2015.*
2. शर्मा च. भारतीय दर्शन: आलोचन और अनुशीलन. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास; *2004.*
3. जैन स. जैन, बौद्ध और गीता के आचार दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन (भाग-*1).* जयपुर: राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान; *1982.*
4. कुमारी स, प्रसाद प. बौद्ध और जैन धर्म के विचार में तुलना. जर्नल ऑफ़ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च. *2018;5(10):*अक्टूबर.
5. शर्मा च. भारतीय दर्शन: आलोचन और अनुशीलन. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास; *2004.*
6. ओड ल. शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी; *2010.*
7. पाठक आरप, मिश्रा सुके. जैन शिक्षा दर्शन. दिल्ली: कनिष्क पब्लिशर्स; *2022.*
8. आचार्य उमा स्वाती. तत्त्वार्थ सूत्र. मुम्बई: जैन स्टडी सर्कल; *1998.*
9. पाण्डेय एक. बौद्ध संस्कृति के विविध आयाम. नई दिल्ली: प्रतिभा प्रकाशन; *2006.*
10. इलयास स. बौद्ध कालीन शिक्षा दर्शन एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसकी उपादेयता. रिव्यू ऑफ़ रिसर्च. *2018;7(8):*मई.
11. पाठक आरप. बौद्ध शिक्षा दर्शन. दिल्ली: कनिष्क पब्लिशर्स; *2020.*
12. सेनगुप्ता व. बौद्धकालीन शिक्षा पद्धति. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसेज इन सोशल साइंसेज. *2016;4(1):*जनवरी-मार्च:*07-09.*
13. पाठक आरप. बौद्ध शिक्षा दर्शन. दिल्ली: कनिष्क पब्लिशर्स; *2020.*

© 2025 महेन्द्र कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

14. कुमार व. जैन एवं बौद्ध शिक्षा दर्शन: एक तुलनात्मक अध्ययन. वाराणसी: पार्श्वनाथ विद्यापीठ*; 2003.*
15. चौधरी म. इक्कीसवीं सदी में बौद्ध दर्शन की शिक्षा में उपादेयता. *IOSR* जर्नल ऑफ ह्यूमेनिटीज एंड सोशल साइंस. *2018;23(8):*अगस्त:*66-74.*
16. अल्टेकर एएस. प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति. वाराणसी: मनोहर प्रकाशन*; 1980.*
17. जैन हब. प्राचीन भारत की जैन शिक्षण पद्धति. अहमदाबाद: हजारीमल मुनि स्मृति ग्रंथालय*; 1965.*
18. कौर क. प्राचीन भारतीय शिक्षा में बौद्धकालीन शिक्षा का विश्लेषणात्मक अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन ऐकडेमिक वर्ल्ड. *2021;1(1):*अगस्त:*1-4.*

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 महेन्द्र कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/